Contents: 1. कुतुबुद्दिन ऐबक (परिचय) सह जीवन (सूची) परिचय।
2. कुतुबुद्दिन ऐबक और दिल्ली सल्तनत का समय।
3. कुतुबुद्दिन ऐबक की समस्याएँ एवं उपलब्धियाँ।
4. कुतुबुद्दिन ऐबक का मूल्यांकन।

1. कुतुबुद्दिन ऐबक का परिचय सह जीवन परिचय :

कुतुबुद्दिन ऐबक मध्यकालीन भारत के शासक थें, और साथ ही साथ दिल्ली सलतनत के पहले शासक भी थें, और गुलाम वंश के पहले सल्तनत थें। ऐबक समुदाय के वे तुर्किश थें और सिर्फ 1206 से 1210 के बीच चार साल के लिए सुल्तान थें। काजी ने कुतुबुद्दिन की देखभाल काफी अच्छी तरह से की थी, और बचपन में ही कुतुबुद्दिन को तीरंदाजी, तलवारबाजी, शिक्षा और घोड़े चलाने का प्रशिक्षण दे रखा था। लेकिन जब उनकी शिक्षक की मृत्यु हो गयी, तब उनके बेटे ने कुतुबुद्दिन को एक व्यापारी को बेच दिया।

और अन्ततः उन्हें मध्य अफगानिस्तान में घोर के शासक सुल्तान मुहम्मद घोरी ने खरीदा था। कुतुबुद्दिन ऐबक ने जल्द ही अपने हुनर से मो० घोरी को आकर्षित कर दिया था। उसके बाद जल्द ही मुहम्मद घोरी के चहेते बन गये थें। उत्तरी भारत के बहुत से राज्य को बाद में कुतुबुद्दिन ने ही हथिया लिया था। और जैसे-जैसे घोरी के सुल्तान का सम्राज्य बढ़ता गया वैसे-वैसे उन्होनें कुतुबुद्दिन को मध्य भारत में शासन करने का अधिकार दे दिया था।

अफगानिस्तान ने अपने सम्राज्य का विस्तार कर मुहम्मद घोरी ने खुद को एक मजबूत और शक्तिशाली शासक साबित किया था। उनका ज्यादातर सम्राज्य अफगानिस्तान, पाकिस्तान और पूरे उत्तर भारत में फैला हुआ था। और इसीके चलते कुतुबुद्दिन ऐबक को भी 1206 में दिल्ली का सुल्तान की पदवी दी गयी थी। उस समय मु० घोरी की युद्ध भूमी पर ही मृत्यु हो गयी थी। उन्होनें घोरी सम्राज्य में प्रशासनिक नियंत्रण को सुधारने के काफी प्रयास भी किये थें।

• शासन क्षेत्र :

तराइन के युद्ध के बाद मुइज्जुद्दीन गजनी लौट गया और भारत के विभिन्न क्षेत्रों का शासन किया और अपने विश्वसनीय गुलाम कुतुबुद्दिन ऐबक के हाथों में छोड़ दिया। पृथ्वीराज के पुत्र को रणथम्बौर सौंप दिया, जो तेरहवीं शताब्दी में शक्तिशाली चौहानों की राजधानी थी। अगले दो वर्षों में ऐबक ने, उपरी दोआब (क्षेत्र) में मेरठ, बरन, तथा कोइल (आधुनीक में अलीगढ) पर कब्जा किया। इस क्षेत्र के शक्तिशाली डोर—ऐबक का मुकाबला किया, लेकिन आश्चर्य की बात है कि

Ajanta PRODUCTS Oxfo